ੴ सतिगुर प्रसादि

79

सतिगुरु नानक प्रगटिया मिटी धुन्ध जगि चानण होआ

क्रांतिकार गुरु नानक

गुरु नानक मिशन, पटियाला।

२० पैसे

क्रांतिकारी गुरु नानक

श्री गुरू नानक देव जी का समूचा जीवन समय की स्थिति में एक बहुत बडा इन्कलाब था। प्रचलित कर्म धर्म के बारे शताब्दियों से बने हुए विश्वास और सामाजिक रहन सहन का गुरू जी ने खुले रूप में विरोध ही नहीं किया बल्कि आप की कथनी और करनी में युग-परिवर्तन के अंकुर मौजूद थे। एक हिन्दू परिवार में जन्म ले कर हिन्दू धर्म में प्रवेश कराने वाली मुख्य रीति जनेऊ पहनना, अपने दादा जी का श्राद्ध करना, और सूतक पातक रस्में अपनाने से इनकार करना आप की क्रांतिकारी रूचि को द्योतक है। परन्तु सुल्तानपुर में तीन दिन अलोप रहने के पश्चात वेईं नदी से 'न कोई हिन्दू न मुस्लमान' कहते हुए बाहर आना और फिर हर छोटे बड़े हिन्दू तथा मुस्लमान के सम्मुख निर्भयता से यह कहे जाना बताता है कि समय की दो बड़ी कौमें हिन्दू तथा मुस्लमान के सम्बन्ध में आप के उदगार कितने क्रांतिपूर्ण थे। और आप इसे कितनी दृढ़ता से प्रकट कर रहे थे। हिन्दू मुस्लमानों से आप की इस प्रकार की धारणाओं के लिये और इसी प्रकार के और कार्यों के लिये आप से "कुराहिया" (पथ-भ्रष्ट) तक कहा और आप को बुरा भला भी कहा और पत्थर भी मारे। परन्तु यह सब बातें आप के क्रांतिकारी वीचारों में कोई परिवर्तन नहीं ला सकीं और गुरू

जी के क्रांतिकारी आंदोलन में तनिक भी अंतर नहीं पडा । अ प के जीवन में से कुछ एक घटनाओं का वर्णन मातर ही इसे सिद्ध कर देगा । आप का किया हुआ हर कार्य चमत्कार और आश्चर्यजनक लगता और प्रचलित विश्वास तथा रिवाज के पूर्णतः विरुध होता ।

हरिद्वार गंगा के तीर लोगों को सूर्य को जल चढ़ाते देख कर आप ने पशचिम की ओर जल उछालना आरंभ कर दिया । लोगों के पूछने पर बताया कि मेरे धान के खेत पंजाब में सूख रहे हैं, मैं उन्हें जल दे रहा हूं । लोग आप के इस उत्तर पर हंसते हैं तब आप लोगों को पितरों को पानी भेंट करने की व्यर्थता दरशाने के लिये कहते हैं कि यदि मेरा उछाला हुआ जल पंजाब में मेरे खेतों को नहीं सींच सकता तब आप द्वारा पितरों को उछाला हुआ जल जो करोड़ों मील दूर है कैसे पहुँच सकता है। जन्म साखी के प्रष्ट ३२५ पर इस संबन्ध में इस प्रकार लिखा है:

"जहां लोग पूर्व की ओर जल दें वहां बाबा जी पशचिम की ओर जल देने लगे.........तब उन्होंने कहा देव सवारे तुम इस ओर पानी कयों दे रहे हो !.........हम पितरों को जल देते हैं तुम किसे दे रहे हो । श्री बाबा जी ने कहा तुमहारे पितर कहां हैं। तब उन्होंने कहा जी हमारे पितर देव लोक में हैं । तब गुरु जी ने कहा भाई देव-लोक, मृत लोक से कितनी दूर है । तब उन्होने कहा साढ़े उन्चास करोड़ कोस दूर हैं जी. हम उस स्थान को जल देते हैं। तब बाबा जी ने कहा, भाई वहां जल कैसे पहुँचेगा तब उन्होंने कहा जी शास्त्र कहता है पहुँचेगा । जब श्री बाबा जी ने यह बात सुनी तो पहले थोड़ा जल देते थे अब और अधिक देने लग गये । तब फिर उन लोगों

ने कहा कि तुम पानी किस को देते हो तब श्री गुरु जी ने कहा भाई मेरा एक खेत है वह सूख रहा है" आदि.....

कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण का मेला भरा हुआ था। ग्रहण समय अग्नि जलाना, भोजन पकाना, या खाना आदि सूर्य भगवान का भारी निरादर समझा जाता है। गुरु जी वहां जाते हैं और सूर्य ग्रहण के समय सरोवर के किनारे भरे मेले में चुल्हा जला कर मांस पकाना शुरु कर देते हैं। जिसे देख कर हाहाकार मच जाती है। लोग सगझते हैं कि बड़ा भारी अनर्थ हुआ है और क्रोधित होकर गुरू जी को मारने के लिए जाते हैं। कुरूक्षेत्र के पंडित नानू जी भी करोध में भुन रहे है और गुरू नानक पर आक्रमण करने आ रहे लोगों का आह्वान कर रहे हैं परन्तु गुरू जी की सच्चाई के सम्मुख सब आवाक खड़े रह जाते हैं।

इस संबन्ध में जन्म साखी के पृष्ठ ३२७ पर इस प्रकार लिखा हुआ है। 'तब लोग डंडे लकड़ियां हथियार पकड़े दौड़े आए और कहने लगे तुम कौन हो जी। आज के दिन तो तुर्क भी भय मानते हैं, तुम तो हिन्दू साधू नजर आते हो जी। सच कहो इस हंडिया में क्या धरा है। गुरू जी ने कहा हमें भूख लगी है तब हंडिया धरी है। तब सन्यासियों ने कहा 'इस हंडिया में क्या धरा है।' गुर जी ने कहा मांस है। सन्यासियों ने कहा उधर सूर्य ग्रहण लगा है इधर तुम मांस पका कर खाते हो। तब गुरु जी ने कहा तब बाबा जी ने कहा भाई ज्ञान में बात करो'-आदि

गुरु जी मक्के जाते हैं तो लोगों के प्रचलित विश्वास के विरुद्ध रात सोते समय पैर महराब को ओर पसार कर सो जाते हैं। उस पवित्र स्थान का निरादर समझ कर जोवन आप को

लात मार कर पूछता है। कि खुदा के घर की ओर पैर पसार कर क्यों सोए हैं। गुरु जी कहते है जिधर खुदा का घर नहीं है मेरे पैर घसीट कर उधर कर दो।

जन्म साखी के पृष्ठ १३१ पर इस का जिक्र इस प्रकार है—"कल जो नया हाजी दरवेश आया है, बेतरह किबले की ओर टांगे करके सोया है, तब जीवन मन में गुस्सा खाया कि यह मोमन है या काफ़र जो खुदा के घर की ओर पैर कर के सोया हुआ है। तब मुल्ला जीवन गुस्सा खा कर बाबा जी को एक लात मारी, कहने लगा, अबे बन्दे खुदा के तू कौन है... जो खुदा के घर की ओर पैर करके सोया है। तब बाबा जी ने कहा, मुल्ला जी भूल हो गई, जीवन जी, भूले हैं हम तब आप हमारे पैर उठा कर सीधे कर दें। तब मुल्ला जीवन बाबा जी की टांगे पकड़ कर फिरा दी साथ ही मक्के का मूख फिरे।

बगदाद में मरदाना का गायन किया शब्द और गुरु जी की निराली किस्म की आजान सुन कर लोग बड़े क्रोध में आते हैं और हजरत साहिब की बहुत मान हानि जान कर ऐसा करने वाले को दंढ देने के लिये पीर जी से फतवा लेते हैं।

पीर जी हुकम देते हैं कि एसा करने वाले को संगसार अथवा पत्थर मार कर मार डालना चाहिये। सारी भीड़ पीर जी समेत हाथों में पत्थर लिये गुरु जी की ओर आती है। परन्तु यह गुरु जी की महानत् है कि एसी भयानक पागल भीड़ के क्रोध की अग्नि को आप शीतलता शीत तथा प्रेम में परिवर्तित कर देते है।

यह जन्म साखी में इस प्रकार अंकित है।

गुरु जी चलते चलते बगदाद के बाहर जा बैठे, मरदाना लगा शब्द पढ़ने। तब लोगों ने कहा भाई सरोद बन्द करो। तब गुरु जी ने कहा भाई बिना सरोद तो आत्मा प्रसन्न नहीं होती... यदि कहो कि पैगम्बर ने बदफैली सरोद बन्द किए हैं परमात्मा के स्मृण का सरोद तो बन्द नहीं किया..तब पीर ने कहा लीजिए ईमान आवान दीजिए किसी वंश के हो जाइए नहीं तो संगसार करेंगे। जब पीर ने यह बात कही तो गुरु जी ने ऊंचे स्वर में आवान दी श्री गूरु वाक :-

गूरबर अकाल, सत् श्री अकाल
चित चरण नाम, घर घर प्रनाम
सब पर कृपाल, जो रस ज़वाल ....

जगत की उत्पत्ति पालन तथा संहार के सम्बन्ध में प्रचलित विश्वास कि ब्रह्मा विषणु महेश नामक तीन अलग २ शक्तियों ने यह कार्य सम्भाले हुये हैं गुरु जी ने यह कह कर ठुकरा दिया कि एसी कोई स्वतंत्र शक्ति नहीं है। शक्ति वाला तो एक परमात्मा है जिस के बारे आपने वारंबार कहा है "साहिब मेरा एको है एको है भाई एको है।" यह जिन को आप स्वतंत्र शक्तियां मानते हैं यह उसी परमात्मा की भिन्य प्रकार की शक्तियां है।

एका माई जुगति विआई तिन्न चेले परवाणु ॥
इकु सन्सारी इकु भन्डारी इकु लाए दीबाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥
(जपुजी)

फिर जिस ब्रह्मा को आप सन्सार की उत्पति का कारण मानते हैं,

एसे कई ब्रह्मा उसकी चौखट पर उस की सेवा कर रहे हैं।

केते बरमे घाड़त घड़िये रूप रंग के वेस।

(जपुजी)

जो आप सूर्य को भगवान मानते हैं और प्रकृति की और शक्तियों को देवता करके-पूजते हैं ऐसे सूर्य चन्द्र इन्द्र तो अनेक उसके उत्पन किये हैं। "केते इन्द चन्दसूर केते" (जपुजी) आप किस को भगवान या देव करके पूजेंगे।

इस प्रकार भारतवासी दूसरी जाति मूस्लमान जो एक अल्हा के वाहिद लाशरीक तो मानते हैं परन्तू हज़रत मुहम्मद को उस अल्हा का वाहिद रसूल मान कर उस के सिजदे में बैठते थे उन का भ्रम दूर करने और एक ही साहिब की बड़ाई दरशाने के लिये कहते हैं :—

एको साहिब एक खूदाई–खालक सच बेपरवाहे
कई मूहम्मद खड़े दरबार–पार न पावहि बेशुमार ॥

रसूल रसाल दुनिया मे आइआ–
जब चाहिया तब पकड़ मंगाइया
इउ सही किया है नानक बन्दे
पाक खूदाई और सभ बन्दे

(बड़ी जन्म साखी सफा ४०२

हिन्दू विद्वानों ने तीन लोक आकाश,मात और पालन तथा मूस्लमान विश्वास अनुसार चौदह तबक,सत आकाश तथा सात पताल माने हैं। परन्तु गुरु जी ने "पाताला पाताल लख आगासां आगास" (जपुजी) का महान् क्रांतिकारी विश्वास विश्व के सामने रखा

ग्रौर "धरती होरु परे होरु होरु" बता कर हिन्दूग्रों का धरती के नीचे धौल के खड़े होने वाले प्रचलित विश्वास को

धौल धरम दया का पूत ॥
संतोख थाप रखिया जिन सूत ॥

बता कर वैज्ञानिक व्याख्या की।

कर्म कांडी तथा शरई लोगों को ठीक रास्ता दिखाने के लिये धर्म ग्रौर मज़हब का दुरप्रयोग करने वाले तथा धर्म के नाम पर अधर्म कमाने वाले लोगों के प्रति उच्चारण किए हुए कठोर पर सत्य बचन ग्राप के क्रांतिकारी स्वभाव के लखायक हैं। ग्राप के एसे विचार जिन के द्वारा ग्राप सूतक पातक गऊ ब्रह्मण ग्रौर पितर पूजन, जनेऊ विवाह, निकाह सुन्नत, रोजे निमाज़, तीर्थ यात्रा ग्रौर ग्रठसठ ग्रौर प्रयाग स्नान की वास्तविकता को नग्न करते हैं तथा वेद-पाठ एवं कुरान हदीस को गलत तथा नाजाइज़ उपयोग की कड़ी ग्रालोचना करते हैं विशेष रूप से प्रभाव पूर्ण है। ग्राप ने देखा कि बेशक मन्दिरों ग्रौर मस्जिदों में लोगों का ग्राना जाना कम नहीं तथा न ही यंत्र-पाठ ग्रौर सिजदों के ग्रोर कोई कसर है परन्तु नितय प्रति के रचनातमक जीवन में पाठों तथा सिजदों का कोई प्रभाव नहीं रहा, ग्रथवा दीन धर्म का स्थान मस्जिद के महराब ग्रौर देवालय की चौखट के ग्रन्दर था। मंदिर तथा मस्जिद के बाहर नितय का कार व्यवहार धर्म या ग्राचार भावना से रिक्त हो चुका था। बड़े वेद पाठी या शरई ग्रौर निमाज़ी तथा तीर्थ यात्री या हाजी लोग यह दृढ़ किये बैठे थे कि नितय प्रति के जीवन में कमाए पाप ग्रौर ठगियां निमाजां ग्रौर पाठों से धोए जाते हैं। मनुष्य बुरे काम करता हुग्रा तीर्थ स्नान

करके या हज करके अपने किये गुनाहों की मैल अपने मन से उतार सकता है। ऐसे भ्रम में बड़े हुए समाज के अंदर परिवर्तन लाना आप के ज़बरदस्त क्रांतिकारी व्यक्तित्व का बहुत बड़ा प्रमाण है। गूरु जी ने ऐसे आंदोलन की नीव बड़ी मजबूती से डाली। आप ने यह जान लिया होगा कि कोई क्रांतिकारी अंदोलन स्वयं उस के भीतर प्रवेश किये बिना नहीं चलाया जा सकता। इसी लिये जिस समाज में आप यह क्रांति लाना चाहते थे, आप उस के भीतर भुज कर दाखिल हूए। समाज के हर दुख सुख को अपनाया। समाज के रेहन सहन, रीति रिवाज, मेले त्योहार, स्थान स्थान को भाषा और समाज के धार्मिक क्षेत्रों मजलिसों नथा गोष्टियों को अपनाया केवल साघू संतों, पीरों फकीरों के पास ही नहीं गये बल्कि चोरों, ठगों डाकुओं बदमाशों राज तथा जाति अभिमानिओं, वैशनवों, नीच तथा उच्च-जाति वालों जालिमों, बादशाहों तथा नवाबों से सीधी टक्कर लेने से संकोच नहीं किया। इन सब मिलनों और बैठकों में सब से अधिक प्रभाव गुरु जी के निजी जीवन संस्कारों, आप का अति मीठे सनिम् कोमल बचनों का और हर किसी के साथ प्रेम भरे और स्रोताओं के अंदर बस जाने वाले भाव पूर्ण शब्दों के प्रयोग का होता था। आप के बचन हर किसी के संग बेशक वह बैर भावना ही ले कर क्यों न आया हो, इतने रसिक और भाव पूर्ण होते कि भयानक से भयानक दषा भी स्वभाविक बल्कि सनेह पूर्ण रूप धारण कर लेती। उपर लिखित हरिद्वार, कूरुक्षेत्र मक्का और बगदाद की सब घटनाए और जगन नाथ पुरी तथा सुल्तानपुर आदि की घटनाएँ गूरू जी की अति उच्च बड़ाई की साक्षी है। परन्तू आप की वाणी की मृदुलता और

आप की सुहृदता किसी भी कीमत पर आप के क्रांतिकारी विचारों की सच्चाई और महतता में अन्तर नहीं आने देती। आप की सच्ची और खरी खरी बातें सुनने वालों को प्यारी लगती और उन के मन में गुरु जी के लिये आदर और सत्कार पैदा कर देतीं। यही आप के पास सब से बड़ी करामात थी जिस के बल पर गुरु जी ने –

उगवन ते आथवरा नऔ खंड पृथ्वी सब झुकाई
(भाई गुरु दास जी)

गुरु जी को सिद्धों से हुई बात चीत के प्रसंग में भाई गुरदास जी अपनी पहली वार की ४२वीं पउरी में लिखते हैं–

बाबा बोले नाथ जी शब्द सुनो सच मुख्हु अलाई ॥
बाझहु सचे नाम दे होर करामात असाथे नाई ॥

भाई गुरदास ने गुरु नानक देव जी की इस महानता का करता पुरुष वाहिगुरु की आप पर विशेष कृपा समझते हुए इस का ज़िक्र इस प्रकार किया है–

पहलां बाबे पाया बख्शदर पिछों दे फिर घात कमाई ॥
रेत अक आहार कर रोड़ां की गुर करी विछाई ॥
भारी करीं तपस्या बड़े भाग हरि स्यों बन आई ॥
बाबा पैधा सच खन्ड नवनिधि नाम गरीबी पाई ॥
वार १ पउरी २४

इसी लिए गुरु अमरदास जी ने फुरमाया है –

सा सिद्धि सा करामात है अचिंत करै जिस दात
(वार सोरठ महला ३)

गुरु नानक जी की जिस नम्रता (गरीबी) का वर्नण भा
गुरदास जी ने ऊपर लिखित पंक्तियों में किया है उस के बहु
बड़े धारणी होते हुए भी गुरु जी एक महान क्रांतिकारी आंदोल
के बानी थे। प्रकट रूप में क्रांति और नम्रता (गरीबी) स्वभा
दो विरोध वाले अंश जान पडते हैं और इन दोनों गुणों के ए
ही व्यक्ति में होना आश्चर्य जनक लगता है। परन्तु यह आश्च
र्यता गुरु नानक देव जी की बड़ाई है। गुरु जी के क्रांतिका
परन्तु अति मृदुक स्वभाव को हम कई उदाहरण ऊपर देख चु
हैं फिर भी आप के कुछ एक वचनों के हवाले इन को औ
अधिक स्पष्ट करेंगे।

ब्रह्मण जिस को समय का हिन्दू देव समान पूजता था
सम्बन्ध में गुरु जी कितना स्पष्ट कहते हैं-

पड़ि पुस्तक संधिया बादं ॥
सिल पूजस बंगल समाध ॥ (वार आसा महला
माणस खाणो करहि निवाज ॥
छुरी वगाइनि तिन गल ताग ॥
तिन घरिं ब्रह्मण पूरहि नाद ॥
ओना भी आवहि ओई साद ॥
कूड़ी रास कूड़ा वापारु ॥
कूड़ बोल करहि आहारु ॥
सरम धरम का डेरा दूर ॥
नानक कूड़ रहिया भरपूर ॥
मथै टिका तेंडि धोती कखाई ॥
हथ छुरी जगत कासाई ॥

(वार आसा महला

समय की हकूमत का घिनाउना चित्र खींचते हुए मृतक हो चुकी लोक मत को पुनः सुरजीत करने के प्रयत्न में आप बताते हैं कि हाकम गरीब-मार करने वाले सिंह की भांति तथा उन के मुसाहब कुत्तों की भांति हैं। उनका प्रजा के साथ व्योवहार देख कर छोटे कर्मचारी नाखुन मार मार कर गरीबों को जख्मी करते और कुत्ते रूपी मुसाइबों से मिल कर इन का खून पीते हैं। अथवा बड़े कर्मचारी का व्यवहार छोटे कर्मचारी को प्रोत्साहन दे कर उन के द्वारा गरीब जनता के खून में नहा रहा है।

राजे सींह मुकदम कुत्ते'

(वार मल्हार महला १)

और

कलि काती राजे कासाई धरम पंख करि उडरिया ॥
कूड़ अमावस सच चन्द्रमा दीसै नाहीं कह चड़िया ॥

(वार माझ महला १)

साधारण जनता को लोभ तथा पाप ने अंधा कर रखा है हर बात में झूठ प्रधान है। काम और क्रोध के बस हुए बल वाले लोग गरीब के साथ जुल्म कर रहे हैं। पर वह स्वभिमान दीन भोले भाले लोग जालिमों की खोटी नीयत से अभिज्ञ फिर उन हीं का पानी भरते हैं। एसे विचार दे कर निचले स्तर के लोगों को सरमायादारी का जूला उतारफें कने की प्रेरणा कितने सुन्दर शब्दों में दी है।

लबु पाप दुइ राजा महता कूड़ होआ सिक्दार।
काम नेबु सदि पुछिए बहि बहि करे बोचार ॥
अंधी रय्यीअत ज्ञान बिहूनी भाहि भरे मुरदार ॥

(वार आसा महला १)

फिर निरीह हिन्दू प्रजा में जालम पठान हकूमत के विरुद्ध साह
भरने के लिए उन के स्वाभिमान को किस प्रकार झंझोडते हैं ।

आदि पुरख को अलहु कहिए, सेखा आई वारी ।
देवल देवतियां कर लगा एसी कीरति चाली ।।
कूजा बांग निवाज मुसल्ल नील रूप बनवारी ।।
घर घर मीयां सभना जीआ, बोली अवर तुम्हारी ।।
(बसंत महला १

और

कर्म परवाण कतेब कुराण, पोथी पंडित रहे पुराण ।।
नानक नाम्रो भइया रहमाण, करि करता तू एको जान ।।
(रामकली महला १

कलि कलवाली सरा निबेड़ी काजी कृसना होआ ।
(रामकली महला १

गुरु नानक देव जी का उक्त युग परवर्तक आंदोलन पूर्ण
बेशक आप के दो शताब्दियों पश्चात अगंमड़े मर्द गुरु गोबि
सिंह जी के समय फलीभूत हुआ (जिस का सविस्तार वर्णन ह
इस से अगले अंक मर्द अगंमड़ा में करेंगे) परन्तु इस की नीं
गुरु नानक जी के क्रांतिकारी व्यक्तित्व द्वारा पन्द्रहवीं शता
ई० में रखी जा चुकी थी । जिस सामराज्य और सरमाएदा
के विरुद्ध यूरोप में अठारवीं शताब्दी में लिबर्टी और इक्वैलि
(आज़ाद और समानता) का परचम उँचा किया जिस बीस
शताब्दी के आरम्भ में रूस ने तथा मध्य में चीन ने मज़दूर त
किसान का पक्ष लेते हुए कम्यूनिज्म का नाम दिया वह अंदोल
भारत में पन्द्रवी शताब्दी में गुरु नानक जी ने इन शब्दो

प्रारभ किया था :-

नीचा अन्दर नीच जात नीची हू अति नीच।
नानक तिन के संग साथ वडियां सो क्या रीस ।।
(श्री राग महला १)

और यह कहते हुये हाथों से कृत करते हुये लालो बढ़ई की सूखी कोधरे की रोटी को सरमाएदारी के हल्वे पूरी से प्राथमिकता दी। गुरु नानक के इस आंदोलन और आधुनिक कम्यूनिज्म पक्षीय किसान मजदूर आंदोलन में अन्तर केवल इतना है जहां आज का कम्यूनिस्ट विरोधियों को मलियामेट कर के उसकी कतलगाह के ऊपर उसी की हड्डियों और मीज के मसाले से भरी नींव पर कम्यूनिज्म का महल खड़ा करता है, वहां गुरु नानक का क्रांतिकारी अंदोलन प्रेम-भावना और विचारों के प्रभाव से सरमाएदारी को सेवा और एकीकरण की ओर पलटता है और उस "एक पिता एकस के हम बारिक" की सद्-भावना देता है। इस के उदाहरण इतिहास के पन्नों पर, भूमियां चोर, सज्जन ठग, हमजा गौंस पीर, राजा शिवनाभ और मलिक भागो के वृतांतों से स्पष्ट है। इतना ही नहीं जहां कम्यूनिज्म का धेय सब के लिये समान रोटी कपड़ा और मकान का दिया जाना बताया जाता है और यही मनुष्य का अंतिम आदेश है और इसी को ले कर कम्यूनिज्म तथा सोशियलिज्म का प्रादुर्भाव हुआ, वहां गुरु नानक की क्रांति सेवा एकीकरण की भावना दृढ़ ही नहीं करवाती बल्कि इसी में सच्चे मालिक सब के पिता प्रभु की असीम कृपा के चमत्कार दिख पडते हैं।

जित्थे नीच समालीअन तित्थे नदर तेरी बखशीश
(श्री राग महला १)

अ.प द्वारा लाई गई क्रांति कम्यूनिस्टों की रोटी, कपड़ा मकान की पंचभूतक आवश्यकताओं को पूरा करने पर ही समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि शरीर के साथ-स थ आतमिक भूख जो प्रभु की 'नदर' (दृष्टि) से ही पूरी हो सकती है, की तृप्ति को भी यह क्रांति परी करती है।

गुरु नानक के धेय्य था मनुष्य मात्र की शरीरिक और अ त्मक दोनों प्रकार की अतृप्तिओं का साधन करना, जिसका प्रबन्ध आप ने एसी क्रांति में देखा, जो प्रत्येक मनुष्य को हाथों से काम करना और बांट कर खाना सिखाए, इसी लिये आप ने कहा—

घालि खाए किछु हथहु देइ॥
नानक राह पछाणहि सेइ॥

(वार सारंग महला १)

जो हर किसी को अपने अधिकार पर काइम रहना सिखाए और अन्य किसी की वस्तु को गाय सूअर की सौगंध की उलघना के समान माने जिसे आप ने इस प्रकार कहा है :—

हक पराइया नानका उस सूअर उस गाइ॥

(वार माझ महला १)

और साथ ही कहा :—

लालच छोडहो अंधिहो लालचि दुख भारी

(आसा महला १)

गुरु नानक की लाई क्रांति के कोष में इन्सान की भलाईयों का तत्व elixir मन की गरीबी और रसना की मृदूलता है। संसार

के कठिन से कठिन घाटियां, मीठा बोलने और झुक कर चलने से हल हो जाती हैं। गुरु जी ने इस का प्रयोग अपने जीवन मे आई हर घटना समय किया और जब यह आप की कसौटी पर पूर्णतः सही निकला। आप ने स्पष्ट रूप से लोगो को बताया कि :-

"मिठुत नीवी नानका गुण चन्गआईया तत्त"

(आसा महला १)

और इसकी पुष्टि में कहा :-

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ

(वार आसा महला १)

और

जितु बोलिए पति पाइए सो बोलिया परवाणु
फ़िका बोल विगूचणा सुणि मूरख मन अजाण

(श्री राग महला ८)

गढ़ परीति मिठे बोल

(वार माझ महला १)

और फीके बोल के कारण मनुष्य के अन्दर के क्रोध एवं काम को समझते हुए इन के सम्बन्ध में सूचित किया

"काम क्रोध काइया कउ गालै
जिउं कंचन सोहागा ढाले।"

इस लिए यदि मनुष्य सारे ससार में अपनी विजय का डंका बजा देखना चाहता है तो उस के लिये यह क्रांतिकारी आंदोलन सर्वोत्तम सत्य इन शब्दों में प्रस्तुत करता है :-

मन जीतै जगु जीतु (जपुजी)

इस से अगली बात जो गुरु जी के चलाए आंदोलन का माटो थी वह यह विश्वास कि अन्त में विजय सत्य की ही हुआ करती है। बेशक प्रारम्भ में कुछ समय के लिये सत्य हारता और झूठ विजय होता जान पडता है फिर भी मनुष्य के अन्दर यह दृढ़ता होनी चाहिए कि अन्तिम विजय सत्य की होगी और झूठे का झूठ नग्न होकर उसे पराजित करेगा। इस विचार को गुरु जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है।

कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सच्च रही

(रामकली की वार महला १)

इस लिये मनुष्य को सत्य की ओर से कभी मूंह नहीं मोड़ना चाहिये बल्कि सच्चे कथन और सच्चा करनी के लिये मन में उतसाह और प्रेम जागृत होना चाहिये। यदि सत्य मार्ग मन को पुलकित नहीं करता तो सत्य में अभी कुछ कमी है।

'सच ता पर जानिए जां सचि धरै प्यार'

(आसा की वार महला १)

गुरु जी के कोष में सच (सत्य) की बहुत बढ़ाई है और सतय को सर्वश्रेष्ठ गुण माना है। परन्तु आप कहते हैं कि केवल सिद्धांत मात्र सतय को बड़ा मान लेना ही प्रयाप्त नहीं जब तक हमारा नितय प्रति का जीवन सतय नहीं। जब तक हमारे व्यवहार, हमारे वर्ताव और हमारे लेन देन में सतय का प्रवेश नहीं हुआ अथवा हमारा मनुष्यक आचरण सतय पर आधारित नहीं हुआ इस लिए गुरु जी के विचार में स्वच्छ एवं सच्चा आचार होना मनुष्य के जीवन में सब से उच्च अवस्था है।

'सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचार'

(श्री राग महला १)

इसी लिये गुरु जी ने दिखावे के धर्मी लोगों को जो पाठ पूजा तो बहुत करते हैं परन्तु जिन की करनी धर्म और सतय वाली नहीं कहा क्यों पाखंड करते हैं, "छोडी ले पाखंडा" जिस स्वर्ग की प्राप्ति के लिए तुम यह दिखावा करते हों वह सतय की कमाइ के बिना प्राप्त नहीं हो सकता :–

गल्ली भिसति ना जाईए छुटैं सच कमाई

(वार माझ महला १)

इस लिए अपनी करनी को सुन्दर बनाओ

करनी बाजहू भिसति न पाई

(वार रामकली महला १)

यदि तुम्हारी करनी स्वच्छ होगी तभी तुम पूर्णता प्राप्त कर सकोगे।

जह करनी तहि पूरी मति
करनी बाझहू घटे घटि ॥

(श्री राग महला १)

यह थी क्रांति जो गुरु जी लोगों के नितय प्रति के सामाजिक जीवन में लाना चाहते थे। वर्तमान काल समय अलग अलग देशों में मनुष्यक समानता स्थापित करने के लिए जो क्रांतिकारी योजनाएं चली या काले गोरे अथवा उँच नीच के भेद भाव के लिए जो अन्तरराष्ट्रीय प्रयतन किए जा रहे हैं, इन का सब से सुगम और सहज ही दृढ़ हो सकने वाला वीचार गुरु नानक देव जी ने आज से पांच सौ बर्ष "इन को हिन्दू ना मुस्लमान, का नारा लगा कर दिया और जब लोग इस आश्चर्य चकित करने वाले नारे का भाव समझने से असमर्थ रहे तब आप

ने इस नारे की व्याख्या इस प्रकार की —

सभ महि जोति जोति है सोई

(धनासरी महला

और

जाणहु जोत न पूछहु जाती आगै जाति न हे

(राग आसा महला

और रंग रूप के भेद को मानने वाले को कठोर शब्दों सुनाया :

फक्कड़ जाति फक्कड़ नाओं
सभना जीयां इका छाओ ॥

(वार श्री राग महला १

बल्कि जब आप पर प्रश्न किया गया कि हिन्दू बड़े हैं कि मुस्लमान तब जो उतर आप ने दिया उसे भाई गुरुदास जी अप पहली वार की ३३ वीं पउड़ी में इस प्रकार लिखते हैं :-

पुच्छन गल्ल ईमान दी काज़ी मुल्ला इकठे होई।
बडा सांग वरताइया लख न सके कुदरत कोई।
पुच्छन खोल किताब नू हिन्दू बडा कि मुस्लमनोई।
बाबा आखे हालियां शुभ अमलां बाझों दोवे रोई।
हिन्दू मुस्लमान दोइ दरगह अंदर लैन ना ढोई।

गुरु नानक आंदोलन में मनुष्य के वड़े छोटे होने की कसौटी उ कृ के किये कार्य हैं। इस कसौटी पर परख मनुष्य यदि खरा खज़ाने में दाखिल होगा परन्तु जो खोटे हैं उन को दूर फें

दिया जावेगा। आप ने स्पष्ट कहा है–

करमी आपो आपणी के नेड़े के दूर ॥

(जपूजी)

परन्तु अमलों की कसौटी पर भी आप ने एक और शर्त लगाई कि :–

जिनी नामु धिआइया गये मसकति घालि।
नानक ते मुख उजले केती छुट्टी नालि।

(जपुजी)

अमलों की कसौटी पर परखा जा के, यदि खरा होगा तो रवान तो अवश्य होगा पर जितना अधिक खरा होगा जोहरी की नजर में उस का मोल उतना अधिक होगा। जोहरी को तना प्यारा लगेगा, परन्तु उस सूक्षम तत्व के रूप quintessence । ले जाकर उसी मे लीन होना है जिस के सम्बन्ध में गुरु गोबिंद सिंह जी का कथन है :–

सूक्षम ते सूक्षम कर चोने बिरधन विरध बतावै।

वह तभी समाप्त होगी जब मनुष्य नाम सुमिरन में लग जाएगा और उस का ध्यान करता हुआ "जैसा सेवंहि तैसा होवंहि" उसी का रूप हो जाएगा।

साजन मिले सहज सुभाइ हरि सिउ प्रीति वणी

(तुखारी महला १)

साजन के इस सहज मिलाप के अन्दर ही सदैवी प्रसन्नता है जो गुरु नानक आंदोलन का शिखर है। इस शिखर पर पहुँच साजन की कृपा-दृष्टि में है जिसका पात्र बनने के लिये यह सारा

ग्रांदोलन है। क्रांतिकारी गुरु के ईस ग्रांदोलन का प्रभाव पंजाब तथा भारत पर हुग्रा का संक्षेप वर्णन इसी सम्बन्ध में ग्रगले टरैक्ट "ग्रगंमड़ा मर्द" में पाठक पढ़ेंगे, परन्तु इस लेख के ग्रधूरे प्रतीत होने का भय है यदि हम यह बताए विना इसे समाप्त कर दें कि इस ग्रादोलन ने समूचे तौर पर विश्व विचार धारा में क्रांति उत्पन्न की। इस के फलस्वरुप को मुख्य रखते हुए यहां हम क्रांति को केवल दो दृष्टिकोणों से जांचने का प्रयत्न करेंगे।

१ धर्म विचार धारा के पक्ष में हम देखते हैं ना तो पश्चिमी ग्रथवा मुस्लिम या ईसाई मत के ग्रनुसार ग्रपने ग्राप को एक मात्र पैगम्बर या रसूल ग्रल्हा ही मानते थे हजरत ईसा की तरह खुदा के इकलौते पुत्र, ग्रौर न ही पूर्बी तथा पुरातन भारतीय विचार ग्रनुसार मनुष्य रूप में संसार में ग्रवतरे ग्रवतार। ग्राप का खुदा तो ग्रजूनी हैं जो जन्म मरण के बाहर है ग्रौर ग्रपने ग्राप प्रति स्वयं कहते हैं :-

माशास मूरत नानक नाम करणी कुत्ता दर फुरमान।

(ग्रासा महला १)

फिर ग्राप पश्चिम के पैगम्बरों के भांति ग्रपनी उम्मत को यह भरोसा नहीं दिलाते कि कयामत के रोज सब ग्रात्माएँ परमात्मा के समक्ष ग्रपने लेने देने का लेखा जोखा पेश करेंगी ता वह ग्रपने मुरादों की सफात भरेंगे ग्रौर उन्हें दोजख की ग्राग में झोके जाने से बचा लेंगे। या कैथोलिक विश्वास के ग्रनुसार मरने से पहले फादर के सामने किया गुनाहों का पश्चाताप penauce जीवन भर के सभी पापों को धो देगा। गुरु नानक देव जी तो सारी कथा को बहुत निकट ही समाप्त कर देते हैं :-

करमी करमी होइ वीचारु।
सच्चा आप सच्चा दरबार।
तिथै सोहन पन्च, परवाणु।
नदरी करमि पवै नीसाणु।
कच पकाई ओथैं पाइ'।
नानक गइया जापै जाइ।

(जपुजी)

वह जगह आपकी निगाह में heaven hell बहिश्त दोजख या नर्क स्वर्ग नहीं और न इन की प्राप्त या अप्राप्ति के लिये किसी डर या इच्छा की अवश्यकता ही वे समझते थे। उन के वीचार में परमात्मा के निकट या दूर होना मनुष्य के अच्छे या बुरे होने का नतीजा है। उस की समीपता तथा मिलाप में ही समूचा स्वाद, रस और प्रसन्नता है और उस से दूरी आत्मिक असंतुष्टता का कारण है। गुरु नानक के आंदोलन में गुरु की महान बड़ाई कयामत के दिन गुनाहगार की सफात भरने की नहीं बल्कि उस के जीवन काल में उस को पथ-भ्रष्ट होने से बचा कर "गुरुमुख गाड़ी राह" में चलाने में है और उस गुरु व्यक्ति की विशेष शिक्षा क्या है :-

गुरा इक देहि बुझाई-सभना जीआं का इक दाता सो मैं विसर न जाई (जपुजी)

अच्छे भविश्य का आश्वासन दे कर या मरणोपरान्त उस की बांह पकड़ने का भरोसा दे कर वर्तमान काम के उतरदायत्वों से उसे अनगहली नहीं करने देते बल्कि आपके वीचार में गुरु एसा व्यक्ति है जो जीते जी मनुष्य को देवता बना लेने की शक्ति

रखता है :-

जिनि माणस से देवते कीए करत ना लागी वार।

(आसा दी वार महला १)

मनुष्य का करम क्षेत्र यह संसार और ईस के लिये समय वर्तमान काम अथवा मनुष्य-जीवन ही है। किसी भविष्य की आशा पर वर्तमान को भूल जाना मूर्खता है। यही काम परवान होने और परमात्मा की निकटता प्राप्त करने का है जिस का साधन बन्दो है :-

बन्दे से जी पवहि विच बन्दी वेखण कऊ दीदार।

और यहां रहना ऐसे है-

जिउ जल में कमलु अलिपतु एसी बणत बणाइ।

(वार मलार महला १)

१ गुरु नानक आंदोलन में व्यक्तिगत जीवन से सामाजिक जीवन की खोज एवं पूछ ताछ अधिक तीक्षण है। पुरातन भारतीय विश्वास में धर्म और त्याग अत्यन्त ही निकट थे बल्कि त्याग बिना धर्म असम्म्व समझा जाता था। यही कारण था कि धार्मिक रूचि रचो वाले जंगलों तथा पर्बत की ओर निकल भागते थे। गुरु जी का इस वीचार से तगड़ा विरोध था। भाई गुरदास जी के कथनानुसार गुरु जी सिद्धों से पूछते हैं "सिद्ध छप बैठे परबती कौण जगत को पार उतारा"। गुरु जी ने त्याग के मुकाबले में "संसारी रीत चलाई" अथवा सामाजिक क्षेत्र के भीतर धर्म वाला जीवन बिताने वाली मुक्ति लोनों को दी जिस के लिये तयाग वाली भावना के बीच सदाचार वाली

भावना की कड़ी से इन दोनो को जोड़ने का प्रयतन किया। जिस जीवन युक्ति में आतमिक तथा संसारिक भूख दोनों की तृप्ति का साधन हो। उस मुक्ति को अपनाने की अवश्यकता थी। इसी लिए आप ने कहा –

सच ता पर जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥

(आसा दी वार महला १)

यह युक्ति थी धर्म, सदाचार और व्यवहार को एक सूत्र में बांध लेने की, जिस का साधन आप ने भाई वीर सिंह के कथनानुसार धर्म की कृत बांट कर खाना तथा नाम सुमिरन में देखा और लोगों को बताया

घालि खाइ किछु हथहु देइ–नानक राहु पछाणहि सेई ॥

(वार सारंग महला १)

और

सचहु ओरै सभु को उपर सचु आचार

(श्री राग महला १)

इस का रचनातवक नमूना गूरू जी ने अपने जीवन का एक बड़ा भाग करतारपुर में गृहस्थी जीवन बिता कर दिया।

३ वैज्ञानिक दृष्टि से पीछे वर्णन किये कई बिन्दुओं की और पाठकों का धयान दिलाने के बाद केवल इतना लिख देना प्रयाप्त होगा गरु जी का इस सम्बन्ध मे ज्ञान बहुत बिशाल था। रचयता की प्रकृति और रचना सम्बम्धी केवल संकेत मात्र जिन वीचारों का वर्णन अपने क्षेसंप शब्दों में किया है उस में से केवल कुछ एक वीचारों की पुष्टि आप की खोज किसी सीमा तक

कट सकी है। जिस से स्पष्ट होता हैं कि आप से पांच सौ वर्ष पूर्व विश्व का इस ओर का ज्ञान बिल्कुल अन्धकार में था। इस लिये आप के बीचार आपके समकालीन विद्वानों के लिये भी क्रांतिकारी थे परन्तु इस के बावजूद आपने सृजनहार प्रभु की बेअन्नता को अंत वाले माप दंड नापने की चेष्ठा नहीं की बल्कि कहा :

किव करि आखां किव सालाही क्यों बरनी किव जाणा।

(जपुजी)

उस की रचना को देख देख कर उस को अनन्नता के रस का रसास्वादन करने का यतन किया और उस पर कुर्बान होते हैं—

बलिहारी कुदरति बसिया तेरा अंत ना जाइ लखिया।

(वार आसा महला १)

का राग आलाया। और जब उस अकह रस में विभार हो उस में खो जाने की ओर चले तब आप के मुख से बरबस निकला—

वेख विडाणु रहिया विस्मादु
नानक बुझण पूरै भागि॥

(आसा दी वार महला १)

उल्थाकार :—बलविन्दर सिंह कानपुर

क्रांतिकार गुरु नानक

निम्नलिखित संस्थाओं की ओर से संगतो में यह टरैक्ट बांटने की सेवा की गई:

१ श्री गुरु सिंघ सभा, देहरादून।
२ गुरु नानक पब्लिक इंटर कालज देहरादून
३ स. तृलोचन सिंह, प्रेम नगर, देहरादून।
४ गुरमति प्रचार सभा, देहरादून।
५ सिंघ साहब बाबा हजूरा सिंह जी, गुरद्वारा श्री अकाल बुंगा, गुरमति विद्यालय, रेशम माजरी।
६ स. प्रहलाद सिंह, आटो सैंटर, मेन रोड, रांची।
७ गुरु नानक सिख संगत, लाहरदगा।
८ श्री सुखमनी सतिसंग दरबार, गवालीअर।
९ श्री गुरु सिंघ सभा पटियाला।
१० सिख कलचरल मिश्न, गुरद्वारा साहब, कैलड, १५–सी, चंडीगढ़।
११ गुरमति साहित सभा, धनबाद (बिहार)
१२ स. शमशेर सिंह, जाइंट डाइरैक्टर, श्री गंगा नगर।
१३ गुरद्वारा कमेटी, गुरद्वारा रोड, धनबाद (बिहार)
१४ देहली सिख गुरद्वारा बोर्ड, सीस गंज, चादनी चौंक, देहली।
१५ गुरद्वारा प्रबन्धक कमेटी, वाराणसी (यू. पी.)

Publisher : Narain Singh M.A. Secretary Guru Nanak Mission, PATIALA.

First Print (Hindi) 3000

Printer : ENSON Printers, PATIALA.